द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

संसार की भाषाओं का वर्गीकरण

 संसार में लगभग तीन हजार भाषाएँ बोली जाती हैं। इन्हें कई आधारों पर कई वर्गों में बाँटा जा सकता है। वर्गीकरण से किसी भी विषय अथवा वस्तु में सौकर्य आ जाता है। अध्ययन के समय उसे समझने-समझाने में सहायता मिलती है। इसी वास्तविकता एवं व्यावहारिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर विश्व की भाषाओं के अध्ययन केलिए भाषाओं का वर्गीकरण किया है। जिनमें मुख्य आधार दो हैं: (1) आकृति (2) पारिवारिक सम्बन्ध। इन्हीं दोनों आधारों पर भाषाओं के आकृतिमूलक और पारिवारिक वर्गीकरण किए जाते हैं।

 (अ) आकृतिमूलक वर्गीकरण -

 इसे पदात्मक, संरचनात्मक, रूपात्मक, व्याकरणिक अथवा वाक्यमूलक वर्गीकरण भी कहते हैं। सम्बन्ध तत्त्व या पद रचना का सम्बन्ध व्याकरण या भाषा की रूप रचना से है। इसीलिए सम्बन्ध तत्त्व, पद रचना या व्याकरणिक समानता पर आधारित वर्गीकरण आकृतिमूलक या रूपात्मक वर्गीकरण कहलाता है। मूल शब्द से रूप बनाने की प्रक्रिया या पद्धति के आधार पर जो भाषाएँ समानता रखती हैं, इसके अनुसार एक वर्ग में रखी जाती हैं। इसे व्याकरणिक वर्गीकरण या रचनात्मक वर्गीकरण भी कहा जा सकता है। आकृतिमूलक वर्गीकरण को पदात्मक या संरचनात्मक या रूपात्मक नाम भी दिए जा सकते हैं। इस वर्गीकरण का आधार सम्बन्ध तत्त्व से है। यहाँ दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है - सर्वप्रथम, हमें वाक्य में शब्दों का सम्बन्ध किस प्रकार किया गया है। उदाहरण - ’मैंने पुस्तक पढ़ी‘ इस वाक्य में ’मैंने, पुस्तक और पढ़ना‘ अर्थ तत्त्वों को किस प्रकार से एक साथ संबंध में बाँधा गया है, यह देखना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शब्दों को स्पष्ट करने और उनका अर्थ जानने के लिए उसमें विभक्ति जोड़ी जाती है। इस क्रिया में वाक्य रचना हमारे सामने स्पष्ट होती है। द्वितीय, शब्द अथवा पद रचना से संबंधित है, जैसे - ’’मैं, पुस्तक और पढ़ना‘‘ तीन शब्द हैं। इनका यह रूप धातुओं में किस प्रत्ययों के योग से बना है, पद-रचना किस प्रकार हुई है, यह देखना आवश्यक है।

 शब्द = अर्थतत्त्व

 रूप = अर्थतत्त्व + संबंध तत्त्व

इस प्रकार हम देखते हैं कि वाक्य-रचना आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार है। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं - (1) योगात्मक (2) अयोगात्मक

 (1) योगात्मक - योगात्मक (।हहसनजपदंजपदह) शब्द से स्वयं ही स्पष्ट है कि इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्यय, विभक्ति अर्थात संबंध तत्त्व आदि जोड़ कर शब्द और वाक्य की निष्पत्ति की जाती है। विशेष बात यह है कि अर्थ तत्त्व और संबंध तत्त्व एक-दूसरे से मिले रहते हैं। जैसे -

 रामः में राम् (अर्थ तत्त्व) + अः (संबंध तत्त्व)

 उदाहरण के लिए संस्कृत का एक वाक्य ’’रामः हस्तेन धनं ददाति‘‘ (राम हाथ से धन देता है) लिया जा सकता है। इसमें राम् (अर्थ तत्त्व) + अः (संबंध तत्त्व), हस्त (अर्थ तत्त्व) + ऐन (संबंध तत्त्व), धन (अर्थ तत्त्व), + अम् (संबंध तत्त्व) दा (अर्थ तत्त्व) + ति (संबंध तत्त्व) मिले हैं या इन अर्थ तत्त्वों और संबंध तत्त्वों में योग है। इस योग के कारण ही ये भाषाएँ योगात्मक कही जाती हैं। संसार की अधिकांश भाषाएँ योगात्मक हैं। इन भाषाओं को योग की प्रवृत्ति के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है -

 (अ) प्रश्लिष्ट योगात्मक (आ) अश्लिष्ट योगात्मक (इ) श्लिष्ट योगात्मक

 (अ) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा -इसमें संबंध तत्त्व तथा अर्थ तत्त्व का योग इतना मिला-जुला होता है कि उन्हें अलग-अलग न तो पहचाना जा सकता है न एक-दूसरे से अलग ही किया जा सकता है। जैसे - संस्कृत भाषा में ’ऋतु‘ से ’आर्तव‘ बना तथा ’शिशु‘ से ’शैशव‘ बना। ’जिगमिषति‘ अर्थात् वह जाना चाहता है, में वह, जाना, चाहना और वर्तमान कालिक क्रिया का एक साथ बोध हो जाता है। इसके दो भेद हैं -

 पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ तथा आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ -

Û पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ - इन भाषाओं में संबंध तत्त्व और अर्थ तत्त्व का योग इतना पूर्ण रहता है कि वाक्य लगभग एक ही शब्द बन जाता है। इस प्रकार की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वाक्य में पूरे शब्द नहीं आते बल्कि उनका कुछ अंश छूट जाता है और इस प्रकार आधे-आधे शब्दों के संयोग से बना हुआ लम्बा शब्द ही वाक्य हो जाता है। उदाहरण - दक्षिण अमेरिका की चेरोकी भाषा -

नाधोलिनिन त्र हमारे पास नाव लाओ। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ही शब्द पूरे वाक्य का सूचक हो जाता है। यदि इसको पृथक करें तो इस प्रकार शब्द प्रकट होते हैं - नातेन = लाओ, अमोखोल = नाव, निन = हम

Û आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ - जिसे हम अंशतः समाज प्रधान भाषाएँ भी कहते हैं। भोलानाथ तिवारी ने इसे प्रत्यय प्रधान भाषा नाम दिया है। इन भाषाओं में सर्वनामों तथा क्रियाओं का ऐसा मिश्रण हो जाता है कि क्रिया अस्तित्वहीन होकर सर्वनाम की पूरक हो जाती है। उदाहरण -

उन्नेका = उसने कहा।

पेरानीज पर्वतमाला के किनारे बोली जाने वाली बास्क भाषा का उदाहरण देखिए - द कारकिओत त्र मैं उसे उसके पास ले जाता हूँ।

नकारसु = तु मुझे ले जाता है, हकारत = मैं तुझे ले जाता हूँ। इन वाक्यों में केवल सर्वनाम और क्रियाएँ हैं। पूर्ण प्रश्लिष्ट की भाँति आंशिक प्रश्लिष्ट में संज्ञा, विशेषण, क्रिया और अव्यय आदि सभी का योग संभव नहीं होता।

 (आ) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ - इसमें संबंध तत्त्व, अर्थ तत्त्व से इस प्रकार जुड़ा रहता है कि तिल तण्डुलवत दोनों ही स्पष्ट रूप से दिखते हैं। जैसे सुन्दर + ता त्र सुन्दरता, बना + वट + बनावट, घन + त्व + घनत्व (ये हिन्दी के उदाहरण हैं यद्यपि हिन्दी इसकी श्रेणी में नहीं आती)। मैं = ने = मैंने, कर् + एगा = करेगा आदि भी इसी प्रकार के शब्द हैं। एसपैंरेतो भाषा इसका अच्छा उदाहरण है। तुर्की इसकी प्रतिनिधि भाषा है। इसको कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।